राम और सीता

मैलाकी डॉयल

चित्र : क्रिस्टोफर कोरो

राम और सीता

मैलाकी डॉयल

अध्याय एक

राजकुमार राम एक महान योद्धा थे और उनकी सीता नाम की एक सुंदर पत्नी थी.

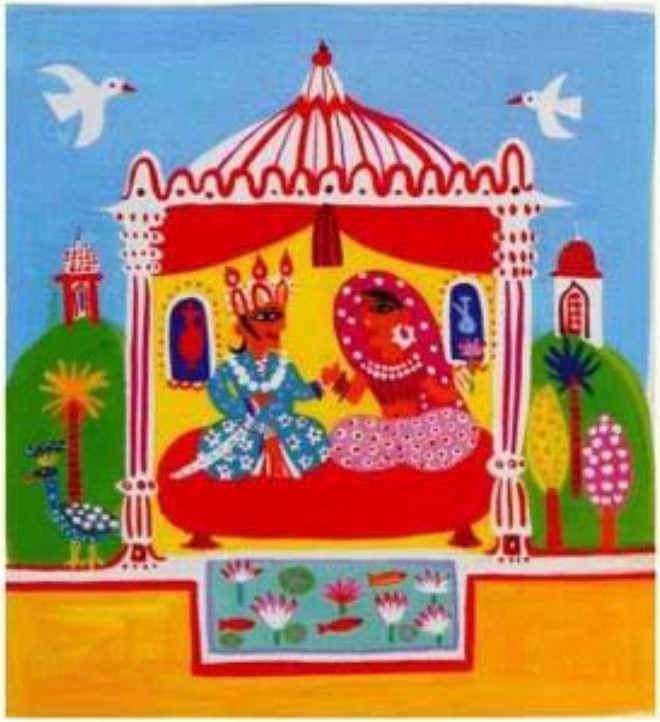

राम की सौतेली माँ नहीं चाहती थीं कि वो राजा बनें. वो अपने पुत्र को राजा बनाना चाहती थीं.

राम से छुटकारा पाने के लिए, उन्होंने युवा राजकुमार के पिता को धोखा देकर राम को जंगल में भिजवा दिया.

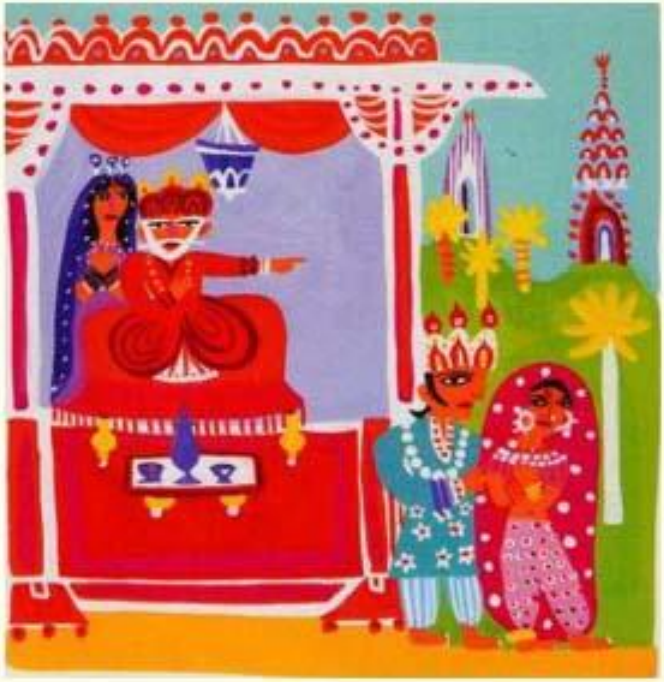

जंगल में राम और सीता एक छोटी सी झोपड़ी में रहने लगे.

उनका जीवन शांतिपूर्ण था. फिर एक दिन राक्षस राजा, रावण ने सीता को देखा.

रावण के बीस हाथ और दस सिर थे. उसकी आंखें आग के अंगारों की तरह लाल थीं, और उसके दांत खंजर के समान तेज थे.

"वाह! कितनी सुंदर राजकुमारी!" रावण ने कहा. "मैं उसे अपनी पत्नी बनाऊँगा!"

अध्याय दो

अगले दिन, जब राम और सीता पानी लाने गए तो उन्होंने एक हिरण को देखा.

"क्या आप इसे मेरे लिए यह हिरन पकड़ सकते हैं?" सीता ने अपने पति से पूछा. मैं एक हिरण को पालना चाहती हूँ."

लेकिन वो हिरण, रावण एक चाल थी. रावण ने ही उसे भेजा था.

जैसे ही राम, घने जंगल में हिरण का पीछा करते हुए गए, रावण ने सीता पर झपट्टा मारा. वो सीता को पेड़ों के ऊपर हवा में उड़ाकर ले गया.

सीता घबरा गईं, लेकिन उन्हें पता था कि उन्हें अपने पति के लिए रास्ते में कोई निशानी छोड़नी चाहिए.

फिर उन्होंने अपनी सोने की पायल निकाली और वो नीचे जमीन पर फेंक दी.

फिर उन्होंने एक के बाद एक करके अपने दोनों झुमके नीचे फेंके. अंत में, उन्होंने अपना चमकदार दुपट्टा भी नीचे फेंका.

नीचे एक पेड़ पर, एक छोटे से सफेद बंदर ने उन गहनों को आसमान से नीचे गिरते हुए देखा.

"शायद आसमान से तारे गिर रहे हैं!" उसने सोचा.

अध्याय तीन

अंत में राम ने जादुई हिरण को पकड़ लिया.

लेकिन जैसे ही उन्होंने हिरण को छुआ, वो एक राक्षस में बदल गया और हवा में उड़ गया.

"वो सब एक चाल थी!" राम ने रोते हुए कहा .

वो दौड़कर झोपड़ी में वापस गए, लेकिन वहां उन्हें अपनी सुंदर पत्नी कहीं दिखाई नहीं दी.

"राक्षसों ने मेरी सीता को हर लिया है!" वो दुःख से कराह उठे. "लेकिन मैं अपनी सीता को ज़रूर ढूंढ निकालूंगा!"

फिर वो सीता की तलाश करने लगे. वो गहरे, घने जंगल के बीच में गए. अंत में उन्हें पत्तों के बीच कुछ चमकीला दिखाई दिया.

"वो सीता की सुनहरी पायल हैं!" उन्होंने कहा.

"यह रही सीता के कान की बाली!" उन्होंने हांफते हुए कहा. एक क्षण बाद उन्होंने कहा, "और वो रही दूसरी बाली!

थोड़ा आगे जाने पर राम ने देखा कि पेड़ों में एक चमकीला कपड़ा फड़फड़ा रहा था.

"सीता का दुपट्टा." उन्होंने कहा. "जो मैंने सीता को शादी वाले दिन दिया था!"

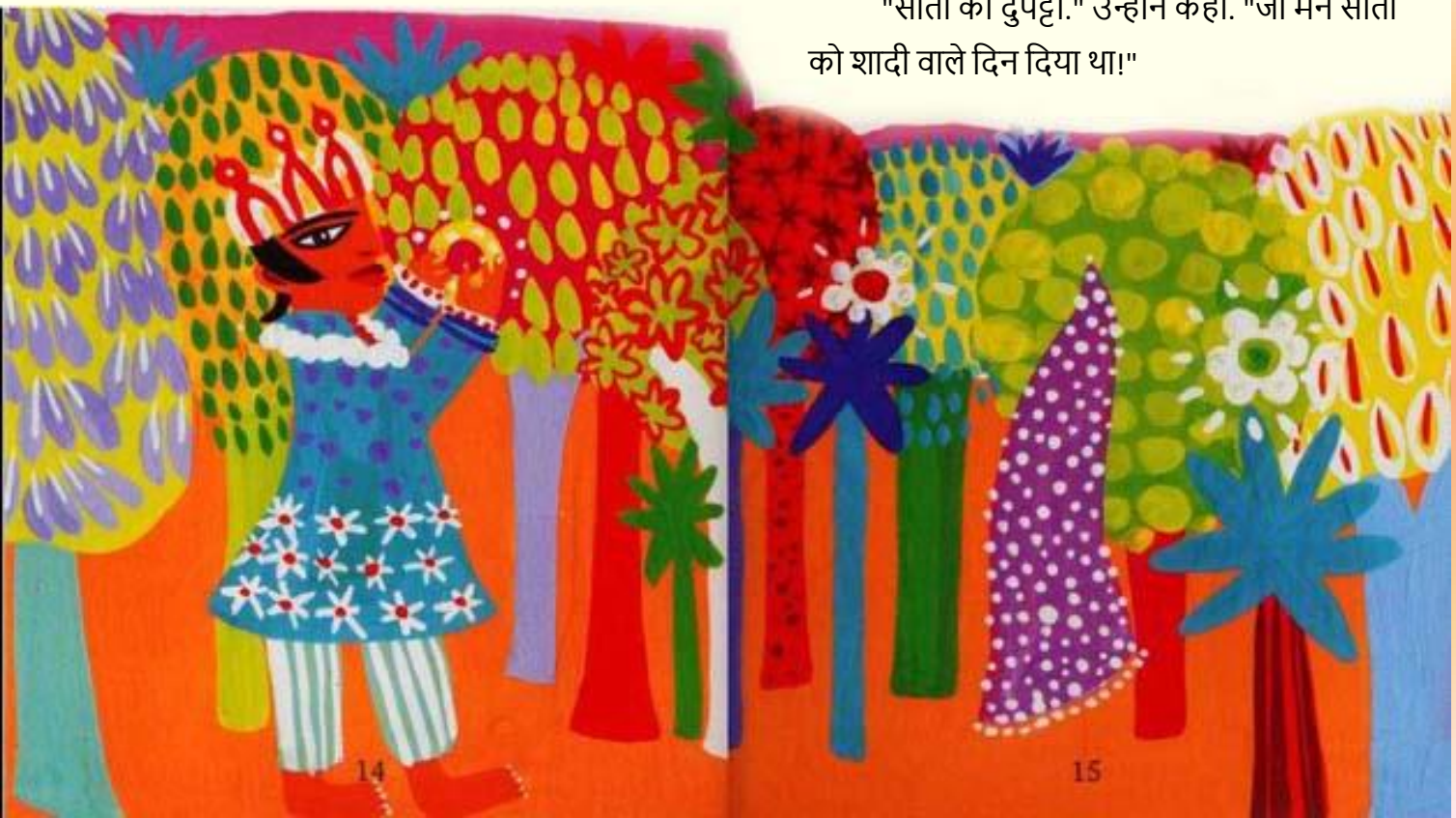

चौथा अध्याय

अचानक, राम के सामने वो छोटा सफेद बंदर आया.

वो वानर राजा, हनुमान थे. हनुमान, राम को पहाड़ी के नीचे एक बड़ी गुफा में ले गया.

हनुमान ने दुनिया के सभी बंदरों को वहां इकट्ठा होने का संदेश भेजा था.

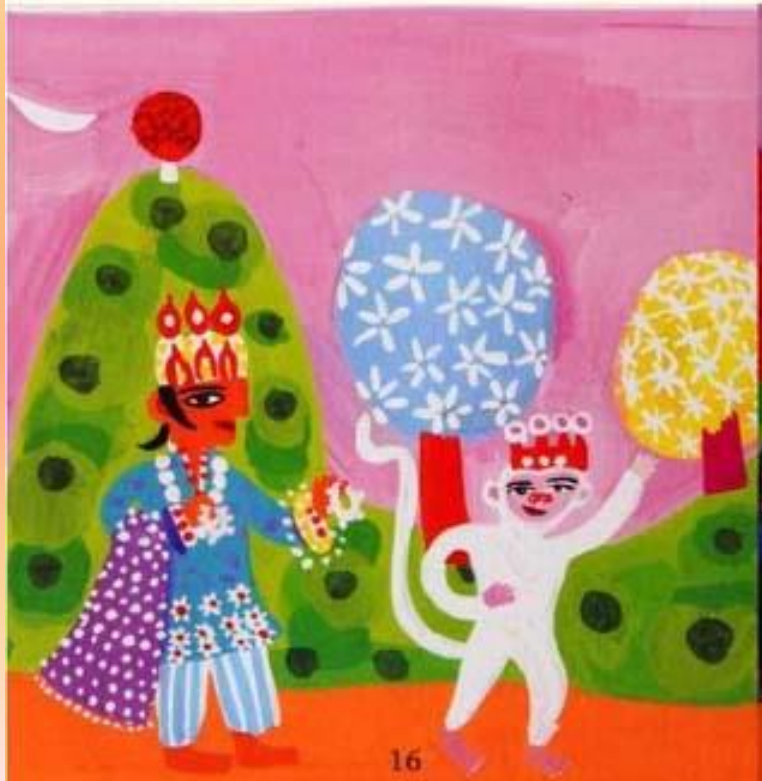

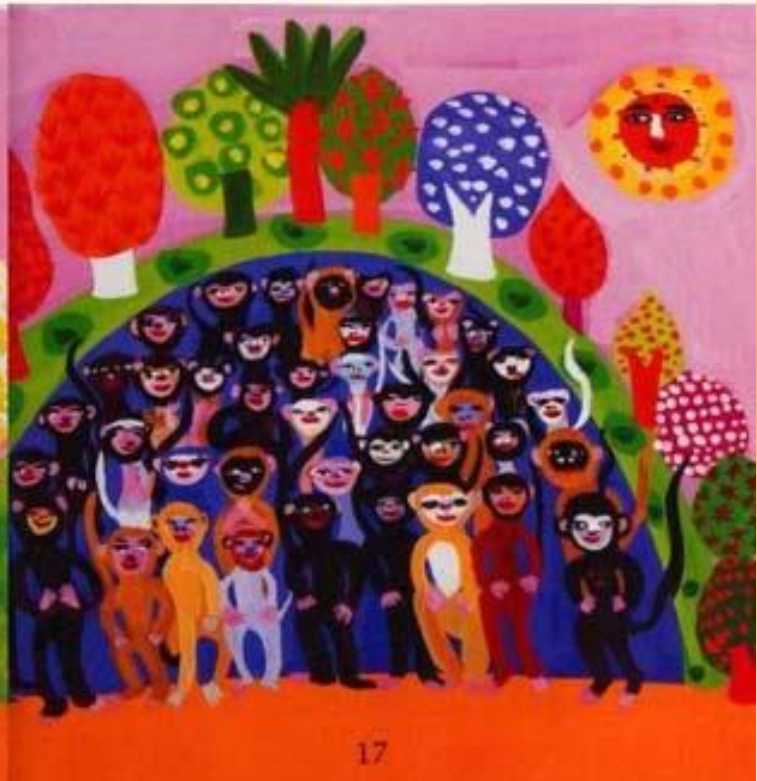

"रावण राक्षस, ने सीता को चुराया है!" हनुमान ने रोते हुए कहा. "राम और उनकी पत्नी सीता, जानवरों के मित्र हैं. इसलिए हमें सीता को खोजना ही होगा!"

उसके बाद बंदर हर दिशा में खोजने निकले. उन्होंने जंगल, पहाड़ और मैदान सभी जगह तलाशी ली.

अंत में, हनुमान का समूह समुद्र के किनारे पहुंचा.

वहाँ, समुद्र में बहुत दूरी पर एक द्वीप था. जैसे ही वानर राजा ने उस द्वीप को देखा, उन्हें पता चला कि सीता वहाँ थी.

अध्याय पांच

वो द्वीप, विशाल चट्टानों और तूफानी समुद्रों से घिरा हुआ था. बंदरों के लिए उस द्वीप तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था.

लेकिन हनुमान, पवन पुत्र थे. वो एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ गए. वहां उन्होंने चारों ओर हवा को अपनी ओर खींचा और फिर लहरों के ऊपर कूद गए.

हनुमान उस द्वीप पर उतरे और उन्होंने जल्द ही सीता को दुष्ट राक्षस के महल के पास खोज निकाला.

"नहीं!" उन्होंने सीता का रोना सुना. "मैं तुमसे कभी शादी नहीं करूंगी, रावण! मैं सिर्फ राम से ही प्रेम करती हूँ!"

जब सीता ने हनुमान को देखा, तो वो उनके आने का मतलब तुरंत समझ गईं.

"इसे पकड़ो!" सीता चिल्लाईं और उन्होंने अपने बालों से एक मोती निकालकर फेंका. "इसे मेरे पति के को जाकर दिखाना. इस इस बात का प्रमाण है कि मैं अभी भी जीवित हूँ!"

वो खबर सुनकर राम बहुत खुश हुए.

हनुमान ने सभी बंदरों को समुद्र के किनारे पर इकट्ठा किया. लेकिन वहां लहरें ऊंची और भयावह थीं, और बंदरों को समुद्र को पार करने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था.

"चलो, हम एक पुल बनाएं!" हनुमान ने आदेश दिया.

फिर सब बंदरों ने मिलकर पत्थर, घास, बालू और मिट्टी इकट्ठी की.

उन्होंने उस सामान को एक-साथ मिलाया और किनारे से द्वीप तक एक विशाल पुल का निर्माण किया.

फिर उन्होंने पुल को पार किया. अंत में वानरों और राक्षसों के बीच एक भीषण युद्ध आरम्भ हुआ.

अध्याय छह

"मैं अपनी पत्नी को बचाने आया हूँ!" राम चिल्लाए. अंत में वो रावण के महल के अंदर घुस गए.

"उससे पहले तुम्हें मुझे मारना होगा!" रावण ने कहा.

अपनी तलवार के एक शक्तिशाली वार से राम ने रावण का एक सिर काट दिया. लेकिन, राम को तब बहुत दहशत हुई जब रावण का सिर वापिस उग आया!

राम ने बार-बार रावण के सिर काटे, लेकिन बार-बार फिर से, रावण के सिर उग आए.

जब राम की तलवार को कुछ सफलता नहीं मिली तो फिर राम ने अपना धनुष उठाया.

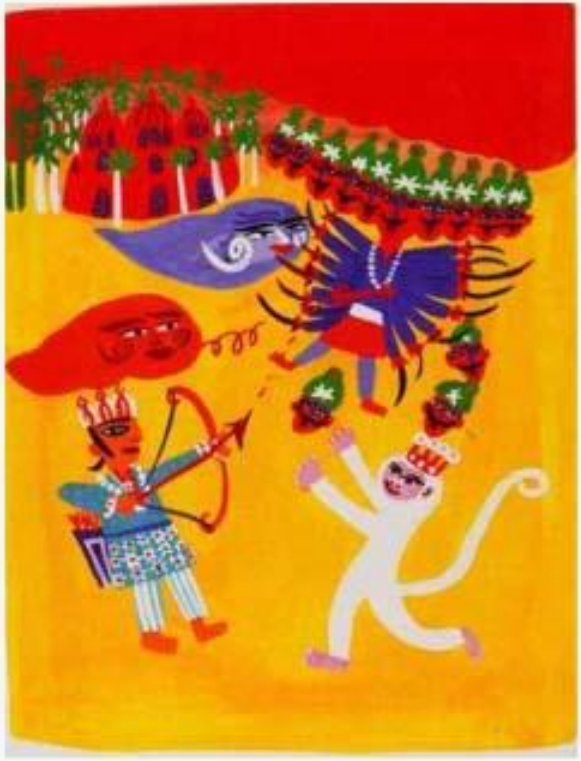

अग्नि और वायु के देवताओं ने तीर का मार्गदर्शन किया और फिर जलते हुए तीर ने रावण की छाती को छेद दिया, जिससे वो मर गया.

उसके बाद राम महल में बंद सीता को खोजने गए.

उन्होंने एक-दूसरे को गर्मजोशी से गले लगाया. फिर वो बाहर आए और उन्होंने युद्ध को रोक दिया.

हनुमान और बंदरों को धन्यवाद देने के बाद, राम और सीता, राजा और रानी के रूप में, अपने देश में राज्य करने के लिए लौटे.

देवताओं ने आकाश से फूल बरसाए, लोगों ने सड़कों पर झंडे लहराए, और हरेक घर की खिड़की में राम की वापसी के स्वागत में तेल के दीपक जलाए गए.

राम ने तब तक अपने राज्य का सुशासन किया जब तक उनका पृथ्वी पर जीवन छोड़ने और स्वर्ग लौटने का समय नहीं आया.

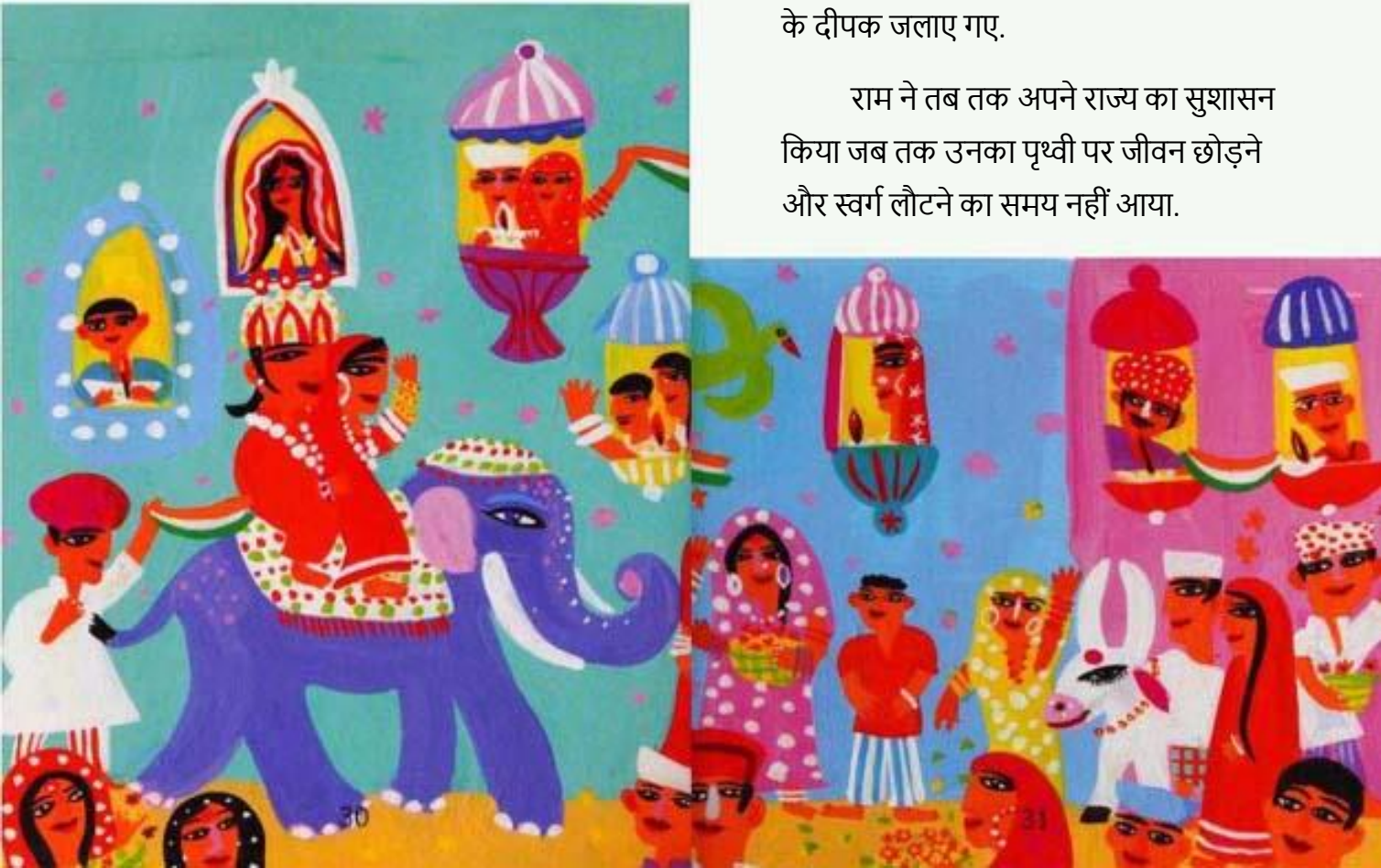

यह है संक्षिप्त में, राम और सीता की कहानी. वो हमें दिखाती है कि कैसे अच्छाई और सच्चाई, बुराई पर जीत हासिल कर सकती है. और एक छोटा तेल का दीपक सबसे अंधेरी रात को भी रोशन कर सकता है.

इसलिए हर साल, दिवाली के त्योहार पर, हिंदू लोग उस ख़ुशी को याद करने के लिए अपने घरों में छोटे तेल के दीपक जलाते हैं.

समाप्त